विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान 2026

मानवता की धड़कनों को जीवन देने वाला एक आध्यात्मिक जनआंदोलन
"ज्ञान से जागृति • योग से शक्ति • रक्तदान से मानवता की सेवा"

"जब किसी अनजान व्यक्ति की धड़कनें आपके रक्त से फिर से चलने लगती हैं, तब वह केवल रक्तदान नहीं होता... वह मानवता के प्रति आपका प्रेम बन जाता है।"

भूमिका

मानव जीवन ईश्वर की अमूल्य देन है। इस जीवन की रक्षा करना केवल चिकित्सकों या अस्पतालों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज का नैतिक दायित्व है। जब किसी दुर्घटना में घायल व्यक्ति, प्रसूता माता, थैलेसीमिया से पीड़ित बालक, कैंसर रोगी या जटिल शल्य चिकित्सा से गुजर रहे मरीज को रक्त की आवश्यकता होती है, तब उसके जीवन की आशा किसी मशीन, दवा या तकनीक पर नहीं, बल्कि किसी संवेदनशील इंसान के स्वैच्छिक रक्तदान पर टिकी होती है।

आज भी विज्ञान मानव रक्त का कृत्रिम विकल्प नहीं बना सका है। रक्त केवल एक स्वस्थ व्यक्ति ही दूसरे व्यक्ति को दे सकता है। इसलिए रक्तदान संसार का सबसे पवित्र, सबसे सुरक्षित और सबसे मूल्यवान दान माना गया है।
भारतीय संस्कृति में कहा गया है—

"परोपकाराय सतां विभूतयः"
अर्थात् सज्जनों की सम्पत्ति सदैव परोपकार के लिए होती है।
रक्तदान इसी परोपकार की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

इसी महान सेवा भावना को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से **ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग (RERF)** द्वारा सम्पूर्ण भारत एवं नेपाल में **विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान 2026** आयोजित किया जा रहा है। यह केवल रक्तदान शिविरों की श्रृंखला नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय एकता और विश्व बंधुत्व को समर्पित एक व्यापक जनआंदोलन है।

ब्रह्माकुमारीज़ – आध्यात्मिकता से सामाजिक परिवर्तन तक
1937 में स्थापित ब्रह्माकुमारीज़ पिछले नौ दशकों से विश्व के 140 से अधिक देशों में आध्यात्मिक जागृति, नैतिक मूल्यों और मानव कल्याण के लिए कार्य कर रही है। राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से संस्था व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास, शांति, प्रेम, करुणा और सेवा की भावना विकसित करती है।

ब्रह्माकुमारीज़ की सेवा का मूल दर्शन अत्यंत सरल है—
"स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन।"

जब व्यक्ति स्वयं सकारात्मक बनता है, तब उसका परिवार बदलता है, परिवार से समाज बदलता है और समाज से राष्ट्र एवं विश्व में परिवर्तन आता है।

इसी विचारधारा के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ का **समाज सेवा प्रभाग (Social Service Wing – RERF)** विभिन्न क्षेत्रों में सेवा परियोजनाएँ संचालित करता है—स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, वरिष्ठ नागरिक कल्याण, नशामुक्ति, शिक्षा, आपदा राहत, महिला सशक्तिकरण, युवा जागरण तथा विशाल रक्तदान अभियान।

सेवा का वह बीज, जो आंदोलन बन गया
रक्तदान शिविर आयोजित करना कोई नई बात नहीं है। देशभर में अनेक संस्थाएँ यह कार्य वर्षों से कर रही हैं। किंतु ब्रह्माकुमारीज़ ने रक्तदान को केवल चिकित्सा सेवा तक सीमित नहीं रखा। संस्था ने इसे आध्यात्मिक चेतना से जोड़ा।

संदेश स्पष्ट था—
"जब मन में शांति होगी, तब समाज में सेवा बढ़ेगी।"
राजयोग मेडिटेशन व्यक्ति के भीतर करुणा, निस्वार्थता और विश्व परिवार की भावना विकसित करता है। यही भावना आगे चलकर रक्तदान जैसे सेवा कार्यों में परिवर्तित होती है। यही कारण है कि इस अभियान का नाम केवल "रक्तदान अभियान" नहीं, बल्कि **"विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान"** रखा गया।

विश्व बंधुत्व – केवल एक विचार नहीं, एक जीवन शैली
आज विश्व अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है—हिंसा, तनाव, युद्ध, भेदभाव, स्वार्थ और सामाजिक दूरी। ऐसे समय में रक्तदान हमें सबसे बड़ा सत्य याद दिलाता है—

रक्त का कोई धर्म नहीं होता।
रक्त की कोई जाति नहीं होती।
रक्त की कोई भाषा नहीं होती।
रक्त की कोई सीमा नहीं होती।

जब किसी हिंदू का रक्त किसी मुस्लिम की जान बचाता है... जब किसी सिख का रक्त किसी ईसाई को जीवन देता है... जब किसी नेपाली का रक्त किसी भारतीय के काम आता है... तब मानवता अपनी सबसे सुंदर पहचान प्रस्तुत करती है।
यही है **विश्व बंधुत्व**।

2025 – सेवा ने रचा इतिहास
वर्ष 2025 ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। राजयोगिनी **दादी प्रकाशमणि जी** की पुण्य स्मृति एवं **विश्व बंधुत्व दिवस** के अवसर पर आयोजित **विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान 2025** में भारत एवं नेपाल के सैकड़ों शहरों और हजारों स्थानों पर रक्तदान शिविर आयोजित किए गए।

सरकारी एवं निजी रक्त बैंक, चिकित्सक, रेड क्रॉस, विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ, युवा संगठन, उद्योग, शिक्षण संस्थान तथा हजारों सेवधारियों ने इस अभियान को जनभागीदारी का उत्सव बना दिया।

इस अभियान के माध्यम से **88,378 यूनिट से अधिक स्वैच्छिक रक्तदान** हुआ।
यह केवल एक आँकड़ा नहीं था।
यह 88,378 परिवारों की आशा थी।
88,378 जीवनों के लिए सुरक्षा थी।
88,378 बार मानवता की जीत थी।

इस अभूतपूर्व सेवा कार्य को **OMG Book of Records** द्वारा **विश्व रिकॉर्ड** के रूप में मान्यता प्रदान की गई। यह सम्मान किसी संस्था का नहीं, बल्कि उन प्रत्येक रक्तदाताओं का सम्मान था जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के अपना रक्त देकर किसी अज्ञात व्यक्ति के जीवन को बचाने का संकल्प लिया।

2026 – अब सेवा को जन-जन तक पहुँचाना है
विश्व रिकॉर्ड प्राप्त करना अंत नहीं था।
वास्तविक उद्देश्य तो समाज में **नियमित स्वैच्छिक रक्तदान की संस्कृति** विकसित करना है।
इसी भावना के साथ **विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान 2026** का आयोजन किया जा रहा है।
इस वर्ष अभियान का उद्देश्य केवल अधिक रक्त संग्रह करना नहीं, बल्कि—

- प्रत्येक जिले तक सेवा पहुँचाना।
- प्रत्येक युवा को रक्तदाता बनाना।
- प्रत्येक परिवार को रक्तदान के प्रति जागरूक करना।
- प्रत्येक संस्थान को इस अभियान से जोड़ना।
- सुरक्षित रक्त उपलब्धता को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना।
- रक्तदान को उत्सव नहीं, जीवनशैली बनाना।

रक्तदान क्यों करें?

भारत में प्रतिवर्ष लाखों यूनिट रक्त की आवश्यकता होती है। दुर्घटनाएँ, हृदय शल्य चिकित्सा, कैंसर उपचार, थैलेसीमिया, हीमोफीलिया, प्रसूति जटिलताएँ और अनेक गंभीर बीमारियाँ निरंतर सुरक्षित रक्त की मांग करती हैं।

एक स्वस्थ व्यक्ति द्वारा किया गया रक्तदान—

- कई मरीजों की जान बचा सकता है।
- रक्त के विभिन्न घटकों (Red Cells, Plasma, Platelets) के रूप में अलग-अलग मरीजों को उपयोगी होता है।
- नियमित रक्त उपलब्धता सुनिश्चित करता है।
- समाज में सहयोग और विश्वास बढ़ाता है।

रक्तदान करने वाले व्यक्ति को भी स्वास्थ्य परीक्षण का लाभ मिलता है तथा शरीर शीघ्र ही नई रक्त कोशिकाओं का निर्माण कर लेता है।

आध्यात्मिकता और रक्तदान का अद्भुत संबंध

राजयोग हमें सिखाता है— **"जो जितना देता है, वह उतना ही समृद्ध बनता है।"**

रक्तदान करते समय व्यक्ति किसी परिचित की सहायता नहीं करता। वह उस व्यक्ति की सहायता करता है जिसे वह कभी जानता भी नहीं। यही निस्वार्थता आध्यात्मिकता की पहचान है। रक्तदान के बाद रक्तदाता के चेहरे पर जो संतोष दिखाई देता है, वह किसी पुरस्कार से नहीं मिलता। वह आत्मा की प्रसन्नता होती है।

युवा शक्ति – अभियान की सबसे बड़ी आशा

भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है। यदि देश का प्रत्येक स्वस्थ युवा वर्ष में एक या दो बार स्वैच्छिक रक्तदान करे, तो रक्त की कमी लगभग समाप्त हो सकती है। आज आवश्यकता केवल रक्तदाताओं की नहीं है। आवश्यकता है **रक्तदान के प्रेरकों** की। ऐसे युवाओं की, जो स्वयं भी रक्तदान करें और अपने साथ दस अन्य लोगों को भी प्रेरित करें।

सामूहिक सहभागिता – यही अभियान की वास्तविक शक्ति है

इस अभियान में समाज का प्रत्येक वर्ग सहभागी बन सकता है—

- चिकित्सक
- रक्त बैंक
- अस्पताल
- प्रशासन
- उद्योग एवं कॉर्पोरेट संस्थान
- विद्यालय एवं महाविद्यालय
- स्वयंसेवी संगठन
- धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ
- मीडिया
- युवा एवं महिला मंडल
- ग्राम पंचायतें
- नगर निकाय
- आम नागरिक

जब पूरा समाज एक उद्देश्य के लिए खड़ा होता है, तभी सेवा आंदोलन बनती है।

हमारा सामूहिक संकल्प

हम नियमित स्वैच्छिक रक्तदान करेंगे।
हम रक्तदान से जुड़े भ्रमों को दूर करेंगे।
हम अपने परिवार, मित्रों और सहकर्मियों को प्रेरित करेंगे।
हम अपने क्षेत्र में रक्तदान शिविर आयोजित कराने में सहयोग देंगे।

हम सेवा, सहयोग, करुणा और विश्व बंधुत्व को अपने जीवन का संस्कार बनाएँगे।

आइए, इतिहास नहीं… भविष्य बनाएँ

विश्व रिकॉर्ड बनाना गर्व की बात है। लेकिन उससे भी बड़ा कार्य है— ऐसा समाज बनाना जहाँ किसी मरीज की मृत्यु केवल रक्त की कमी के कारण न हो। ऐसा भारत बनाना जहाँ रक्तदान एक संस्कार हो। ऐसा विश्व बनाना जहाँ मानवता सबसे बड़ा धर्म हो। यही **विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान 2026** का लक्ष्य है।

समापन संदेश

जब हम रक्तदान करते हैं, तब हम केवल रक्त नहीं देते—
हम किसी माँ की गोद सूनी होने से बचाते हैं।
हम किसी पिता की उम्मीद को जीवित रखते हैं।
हम किसी बच्चे की मुस्कान लौटाते हैं।
हम किसी परिवार की प्रार्थना का उत्तर बन जाते हैं।

आइए...
अपने भीतर की करुणा को कर्म में बदलें।
अपने प्रेम को सेवा में बदलें।
अपने जीवन को मानवता के लिए उपयोगी बनाएँ।
आइए, **विश्व बंधुत्व रक्तदान अभियान 2026** से जुड़ें और यह संदेश पूरे विश्व तक पहुँचाएँ—
"एक बूंद रक्त... अनेक जीवनों की आशा।"
"रक्तदान – जीवनदान।"
"आइए, रक्तदान करें... जीवन बचाएँ... विश्व बंधुत्व को सशक्त बनाएँ।"

समाज सेवा प्रभाग
ब्रह्माकुमारीज़